~~3-5~~ 21

(1) (हलामण) की बात देपरवां सनावड़ा.

21-5-21—Z00M00038- हाकम रवॉं सनावड़ा

हलामण जेठवा जाती के राजपूत थे हलामण के पिताजी का नाम राजा गजकरण था ये राजवी भणवट नगरी थे, हलामण बहुत ही समझदार एव खूंखार राजा थे। इस राजा का नाम हलामण था. इस राजा की पहले दो शादीयों की हुई थी तीसरी शादी की बात है। ये तीसरी शादी की बात जो सोनल नाम की लड़की परमार(सोढ़ी) जाती की उजैन नगरी के राजा की लड़की थी। उस सोनल के पिताजी हमेशा दुबले-पतले और थकान से रहते थे तभी सोनल ने अपनी माता से पूछा कि मॉं मेरे पिताजी दुबले-पतले क्यों है। तभी माता ने सोनल से कहा कि बेटा तेरी सगाई-समबन्ध का सोच है- क्यों कि हमारे लायक कोई राजा का लड़का नहीं है इस बात का सोच है तभी सोनल ने कहा कि माताजी मेरी सगाई का सोच ना करें-

सोनल ने कहा कि मैं मेरा वर अपने आप ढूंढ
लूँगी। सोनल ने कहा कि मैं एक दोहा कहूंगी उस
दोहे का अर्थ जो राजा का लड़का करेगा उसी के
साथ में शादी करूंगी।

("सोनल ने दोहा कहा")

① रूंखो पवन नी सांचरे, देशो पड़े नी कोय.
उण रूंखो रा फल मोकलो, साचा साजा होय.
(शांराम)
ये दोहा लिखकर सोनल ने एक बारठ (भाट)
को दे दिया उसको बताया कि मेरा इस दोहे
का अर्थ मैं आपको बता देती हूँ जो आपको
इस दोहे का अर्थ मेरे वाला हो तभी आप
उस राजा के लड़के को शादी का बोल देना.

(अर्थ सोनल ने कहा)

② माता उणरी जल बसे, पिता बसे आकाश,
जुना कहो तो अब मोकलो, नया आसुमास.